vkfQl e: vfre fnu dk ,glkl

अपने ऑफिस का काम मैंने अब हमारे नये प्रोविंशियल फादर जेवियर सोरेंग को सौंप दिया है। शरीर और मन से भार हल्का होने लगा है। कल रात जब मिस्सा और भोज के बाद सभी से मुलाकात समाप्त हो गयी तो मुझे खूब नींद आने लगी। ऐसा तो नहीं था कि मैं किसी प्रकार से नींद मी अनदेखा करता था। शायद जिम्मेदारी के समाप्त होते ही शरीर ज्यादा ध्यान चाहने लगता है। कुछ डायरी की बातों का लिखने के बाद मैं सोने चला गया।

सुबह जब उठा तो रोजाना की तरह सबसे पहले मोर्निंग वॉक पर चला गया। फिर जैसे–जैसे दिन चढ़ने लगा तो फिर से यह एहसास होने लगा कि कल शाम को जिस तरह से येसु समाजी अपना समय निकालकर नये प्रोविंशियल के स्वागत में आये थे वह मार्के की बात थी। हम जैसे भी काम करते हों और जो भी कमियां हमारे कामों में रह जाती हों, लेकिन एक समाज की छत्रछाया में अपने अस्तित्व के साथ रहना और इस एकता को महसूस करना अपने आप में एक बड़ी बात है। याद आया वह पल जब मिस्सा के बाद एक के बाद एक सभी येसु समाजियों ने नये प्रोविंशियल का स्वागत किया और मुझे धन्यवाद कहा और प्रेम से गले लगाया। सराहना और शाबाशी पाकर मेरा दिल भर आया। मन में एक नया जोश पैदा हो गया और कुछ आत्मविश्वास भी बढ़ा।

खुश होने का एक कारण और भी था। कल शाम के मिस्सा जाने के पहले मैंने जब अपना ईमेल खोला तो पाया कि फादर माइकेल हॉलमैन का पत्र मेरे लिये पड़ा हुआ था। इस पत्र में उन्होंने हमारे संत जेवियर्स कॉलेज तेजपूर के लिये कुछ राशि देने की बात की है। मुझे बहुत खुशी हुई क्योकि इस राशि के लिये पिछले तीन सालों से मैं प्रयासरत था। बहुत कठिनाईयों के बाद यह राशि हमें मिलने की संभावना बनी थी। कॉलेज का काम अब निश्चित रूप से आगे बढ़ाया जा सकता है। अपने उपदेश के समय ही मैंने इस बात का ज़िक भी किया। फादर जेवियर के लिये भी यह अपने आप में खबर थी और वह बहुत खुश हो गया क्योंकि इस राशि की बहुत जरूरत थी। मैंने मिस्सा से वापस आने के बाद फादर माईकेल हॉलमैन को धन्यवाद का पत्र लिखा। लेकिन इस समय मैं एक प्रोविंशियल नहीं रह गया था। इसलिये मैंने उन्हें बताया कि औपचारिक रूप से अब नये प्रोविंशियल ही यह काम कर पायेंगे।

एक बात अवश्य है कि येसु समाजी ऐसे मौकों में जरूर एक साथ जमा होते हैं लेकिन उन्हें वापस जाने की भी जल्दी होती है। देखते ही देखते खाने के बाद लोगों की भीड़ मनरेसा हाउस के बाहरी आंगन में जमा हो गयी जहां से वे अपने गनतव्य स्थानों में जाने लगे थे। गाड़ियां स्टार्ट की जा रही थी। आस पास के लोग जरूर मोटर साइकिल में आये थे, लेकिन अधिकांश अपने मोटर गाडियों में बैठने लगे थे। कुछ समुदाय के लोगों का दूर जाना था इसलिये वे मिस्सा के खत्म होते ही खाना कमरा की ओर चल पड़े थे क्योंकि रात में उन्हें फिर से यात्रा करनी थी। इस मामले में हम जरूर हजारीबाग प्रोविंश से अलग हैं। जहां अपने काम के अलावे अपनों के लिये समय निकाला जाता है। लोग बैठकर आपसी चर्चा करते हैं, एक दूसरे की हाल खबर लेते हैं। अपनों के लिये समय नष्ट करना भी एक बड़ी बात है। बेल्जियम मिशनरियों के समान ही हमारे पास अपनों के साथ समय नष्ट करने का वक्त नहीं है। हम कामकाजी लोग हैं और काम पर ही लौट जाना चाहते हैं। हां एक बात पर प्रगति अवश्य हुई है – सामुहिक बातों के लिये अवश्य एक साथ अब हम आने लगे हैं नहीं तो पहले देखा जा रहा था कि लोग किसी के मर जाने पर भी समय नहीं निकाल पाते थे। एक तो वक्त निकालना और दूसरा आने जाने का खर्चा भी।

अपने नौजवान स्कोलास्टिकों को देखकर अच्छा लगा और भविष्य के लिये आशा बंधी। उन्होंने मनरेसा के बास्केटबॉल मैदान को अच्छी तरह से सिंगारा था और जरूरी प्रकाश और ध्वनि व्यवस्था की थी। जिस ढंग से मिस्सा और स्वागत में गीतों का संचालन हुआ, वह बहुत स्तरीय था। जाहिर है उन्होंने प्रैक्टिस भी किया होगा। लेकिन उसके अलावे हुनर का भी होना जरूरी है। दोनों की मौजूदगी में कोई भी कार्यक्रम बेहतर हो जाता है। येसु समाजियों के भाव और व्यवहारों को वे बहुत करीब से देखते हैं और इस मामले में उनका आकलन और मूल्यांकन कॉफी सटीक रहता है। जिस गहराई से इस पूरे कार्य्रक्रम को येसु समाजी तरजीह दे रहे थे, निश्चित तौर पर यह माना ही जा सकता है कि स्कोलास्टिकों के मन में हमारे इस भाव के प्रति आदर का भाव उत्पन्न हुआ होगा। येसु समाजियों के इन्हीं अलिखित धरोहरों और रीति रस्मों को वे आगे बढ़ायेंगे। अगर उनके बीच कहीं व्यवहार में कमी होती है तो इसके लिये उनका सीनियर वर्ग भी कम उत्तरदायी नहीं होता। लेकिन केवल गलत व्यवहारों की ही बात क्यों करें। स्कोलास्टिकों के मन में ब्रदर हिलारियुस के लिये अपार श्रद्धा है। उन्होंने उनके समर्पण को बहुत नजदीक से देखा है और येसु समाजियो के दीन भाव से काम करने के तरीके को भी पहचाना है। उनके लिये ब्रदर हिलारियुस एक मॉडल हैं। उनका रोज साढ़े तीन बजे सुबह उठ जाना और निवृत होकर गिरजा जाना और प्रार्थना में तल्लीन हो जाना, फिर अपने काम के डेस्क में जाकर यह सुनिश्चित करना कि सभी के लिये सुबह का नाश्ता तैयार मिले। किचन में काम करने वाले जब आये ंतो उनके लिये दरवाजे खुले हों और चुल्हा जलाने के लिये सामान तैयार मिले। कॉलेज में वाणिज्य की कक्षाएं सुबह के साढ़े छः बजे ही शुरू होते हैं सो उनका ख्याल रखना निहायत जरूरी होता है। फिर आम लोगों के आने के साथ ही बीमार येसु समाजियों का ध्यान रखना भी है। इसी दरम्यिान कई बार साक्रामेंत से भेंट करना उनके दिनचर्या का अभिन्न हिस्सा सालों साल बना रहा। आज के बाद वे डिस्पेंसरी में आराम फरमाने के लिये चले जायेंगे। सभी के मन में उनके प्रति सम्मान का भाव बना था। मुझे खुशी हो रही थी कि इस अवसर की साक्षी के लिये पूरे प्रोविंश का एक बहुत बड़ा भाग उपस्थित था। उनके सम्मान में उन्हें एक वाकिंग स्टिक उपहार में दिया गया। ब्रदर हिलारियुस ने बड़े प्रेम से प्रोविंश का उपहार ग्रहण किया। उसके साथ काम करने वाले किचन के साथी कोरिडोर से उन्हें देख रहे थे, मानो किसी का नेपथ्य में चला जाना हो रहा था।

आज के मिस्सा में फादर जेनेरल अडोल्फो निकोलस द्वारा हाल में लिखे पूरे येसु समाज के नाम लिखे गये पत्र को ही मिस्सा का पहला पाठ बनाया गया था। यह पत्र वास्तव में दिल को छूने वाला है, इसलिये पत्र की कापी सभी के लिये सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया था। उपदेश में भी मैंने पत्र के विन्दुओं पर ही अपना ध्यान किया। लोगों को शायद अच्छा लगा। फिर फादर जेवियर की नियुक्ति में किस प्रकार पूरा प्रोविंश शामिल हुआ और अपने हिसाब से सभी समुदायों ने अपने स्तर पर और प्रत्येक येसु समाजी अपने स्तर पर ईश्वर की इच्छा पूरे प्रोविंश के लिये क्या है, पर गौर कर रहे थे। पूरे छः महीनों की प्रक्रिया के बाद हमें फादर जेवियर सोरेंग मिले, जानकर सभी को अच्छा लगा और ईश्वर की इच्छा के बारे में हम वाकिफ हुए।

उपदेश के बाद फादर जेनरल की नियुक्ति पत्र पढ़ा गया और उसी के साथ प्रोविंश की जिम्मेदारी नये प्रोविंशियल फादर जेवियर सोरेंग के कंधों पर आ गयी। इसके बाद से ही मिस्सा के अगले भाग में मुख्य अनुष्ठाता का भाग उन्होंने ले लिया। परम प्रसाद के बाद उन्होंने पूरे प्रोविंश को धन्यवाद के शब्द कहे। फादर अजीत खेस और रंजीत होरो ने पूरे प्रोविंश की ओर से पूर्व प्रोविंशियल को धन्यवाद कहा। इस अवसर पर उपस्थित फादर फ्रांसिस कुरियन, हजारीबाग प्रोविंश के प्रोविंशियल विशेष रूप से उपस्थित थे। संत अल्बर्टस कॉलेज के स्टाफ के सदस्य भी विशेष रूप से निमंत्रित थे। मिस्सा के अंत

में एक छोटा सा स्वागत का कार्यक्रम था तत्पश्चात प्रीति भोज। करीब तीन घंटों में सब कुछ समाप्त हो गया था। लोग वापस जाने की तैयारी में थे और जाने के पहले एक बार सभी से अच्छी तरह से मिल लेना चाहते थे। मुलाकात के लिये छोटा सा ही वक्त था लेकिन उसकी गर्मी को कोई जाने नहीं देना चाहते थे। मनरेसा के बाहरी प्रांगण में लोगों को एक के बाद एक विदाई दी जा रही थी, मिशन में वापस जाने के लिये। सभी के मन में एक नया उत्साह था। तीन ही घंटे का कार्यक्रम दिल में कितना जोश भर जा सकता है, सभी ने गहराई से यह महसूस किया था।